Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 213–217

EMOTIONAL DESCRIPTION OF BEAUTY IN MAGAHI FOLK SONGS

मगही लोकगीतों में रूप सौंदर्य क भावनात्मक वर्णन

Ramniwas Sharma [1], Rashmi Ojha [1]

[1] NCWEB, Aryabhatta College, University of Delhi

ABSTRACT

English: Due to the habits of common man which are present in him from birth, the emotional experience of beauty is in the form of pleasure due to the cultural equality in them. There can certainly be a difference in the forms of expression of this emotional feeling. The elite class can express the feeling of beauty in a polite and cultured way due to its developed cultured mentality. There can be a different way of expressing the feeling of beauty in folk life, but there cannot be any special difference in the knowledge-based attitude in the context of beauty. In the life of the public, the marriage relation of a girl is not established keeping the beauty related to her appearance at the center, but special emphasis is given on her health, education and character related beauty. As an example, we can see how a Magahi folk song writer includes uniqueness, greatness, dedication and physical beauty even in a black groom.

Hindi: लोकमानव की ऐसी आदतें जो उसके अंदर जन्म से ही मौजूद है उसमें संस्कारगत समता के कारण सौंदर्य की भावनात्मक अनुभूति अह्लादन के रूप में होती है। इस संवेगनिष्ठ अनुभूति की अभिव्यक्ति के रूपों में भेद अवश्य हो सकती है। अभिजात्य वर्ग अपनी विकसित संस्कारित मानसिकता के कारण सौन्दर्यानुभूति की अभिव्यक्ति शिष्ट और सुसंस्कृत तरीके से कर सकता है। लोक जीवन में सौंदर्य की अनुभूति को व्यक्त करने का अलग तरीका हो सकता है परन्तु उसके सुन्दरता के संदर्भ में ज्ञानमूलक मनोवृत्ति में कोई खास अंतर नहीं हो सकता। लोकमानस के जीवन में रूप से संबंधित सौन्दर्य को केन्द्र में रखकर कन्या क विवाह संबंध स्थापित नहीं किया जाता बल्कि उसके स्वास्थ, शिक्षा और शीलगत सौन्दर्य पर विशेष रूप से बल दिया जाता है।' उदाहरण के रूप में हम यह देख सकते हैं कि कैसे एक मगही लोकगीतकार काले दूल्हे में भी विशिष्टता, महानता, कर्मनिष्ठता और रूपात्मक सौन्दर्य को सम्मिलित कर देता है।

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.3384

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

लोकमानव की ऐसी आदतें जो उसके अंदर जन्म से ही मौजूद है उसमें संस्कारगत समता के कारण सौंदर्य की भावनात्मक अनुभूति अह्लादन के रूप में होती है। इस संवेगनिष्ठ अनुभूति की अभिव्यक्ति के रूपों में भेद अवश्य हो सकती है। अभिजात्य वर्ग अपनी विकसित संस्कारित मानसिकता के कारण सौन्दर्यानुभूति की अभिव्यक्ति शिष्ट और सुसंस्कृत तरीके से कर सकता है। लोक जीवन में सौंदर्य की अनुभूति को व्यक्त करने का अलग तरीका हो सकता है परन्तु उसके सुन्दरता के संदर्भ में ज्ञानमूलक मनोवृत्ति में कोई खास अंतर नहीं हो सकता। लोकमानस के जीवन में रूप से संबंधित सौन्दर्य को केन्द्र में रखकर कन्या क विवाह संबंध स्थापित नहीं किया जाता बल्कि उसके स्वास्थ, शिक्षा और शीलगत सौन्दर्य पर विशेष रूप से बल दिया जाता है।' उदाहरण के रूप में हम यह देख सकते हैं कि कैसे एक मगही लोकगीतकार काले दूल्हे में भी विशिष्टता, महानता, कर्मनिष्ठता और रूपात्मक सौन्दर्य को सम्मिलित कर देता है।

सुन्दरता की भाव भंगिमा को न तो लोकमानस अपने सीमीत शब्दों में समेट सकता है और नही अपने सीमित शब्दों में परिभाषित कर सकता है। लोकविद्वो ने सुन्दरता की परिभाषा का वर्णन करने का प्रयास भिन्न भिन्न रूपों में किया है, क्योंकि ऐतिहासिक परम्परा और भौगोलिक परिवेश में सुन्दरता की मनोवैज्ञानिक आयाम में परिवर्तन होते रहते हैं। इस उदाहरण के माध्यम से हम देख सकते हैं कि मगही लोकगीतकारों ने काले रंग के वर को भी किस तरह से चित्रित करने की कोशिश किया है।

कारहि कार जनि घोसहुँ जे बेटी, कार अजोध्या सीरी राम हे।

कार के छतिया चन्द्रनवाँ सोभई गे बेटी, तिलक सोमई लिलार हे।

मथवा में सोभई चकमक पगड़िया, गलवा सोभाई मोती हार हे।

भारतीय परंपरा या यू कहे विश्व भर के सभ्य मानसिकता वाले लोगों का यह मानन है कि-

'कन्या वरयते रूपम मता वित्तं पिता श्रुतम्।'

बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्ठन्न इतरे जनाः।।

अर्थात् विवाह सम्बन्ध स्थापित करते समय विवाह योग्य कन्या की वरीयता अपने भावी पति का रूप होता हैं उसकी माता का पसंद अपने दमाद का धनवन हेना तथा पिता की पसंद उसका विद्वान और प्रसिद्ध होना होता है परंतु लोकगीतकार की यह मान्यता है कि काले वर में सुन्दरता की कमी नहीं होती। उनकी सुन्दरता तो गोरे वर्ण के पुरुषों से भी अधिक माना गया है। उदाहरण के रूप में इस गीत में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि श्यामवर्ण के राम का शील सौन्दर्य अद्वितीय है साथ ही कालेवर के वक्ष स्थल पर चंदन का लेप कितना शोभ्यमान होता है, ललाट पर तिलक कितना सुन्दर लगता है, माथे पर चमकती हुई पगड़ी और गले में मोती के हार कितनी मनमोहक होते हैं। आज कुलीन वर्ग बाहरी चका-चैन्ध में विलीन होकर उसी में सुन्दरता का पैमान तया करता है और वहीं दूसरी ओर लोकवि काले वर्ण के व्यक्ति में भी सुन्दरता का चित्रण करता है। यही लोक जीवन और लोकदृष्टि है जो व्यावहारिकता और उपयोगिता पर आधारित रहती है। दिखावा और बाह्य चमक-दमक पर नहीं। लोकभाषा मगही के काव्य (लोकगीत, नाट्य आदि) में समान्यतः सौन्दर्य की अभिव्यक्ति तीन तरह से मिलती है। पहला लोकतात्विक सौन्दर्य, दूसर भाव सौन्दर्य तथा तीसरा कला सौन्दर्य मगही काव्य में अद्वितीय, लोक तात्त्विक सौन्दर्य का समावेश मिलता है। मगही लोकगीतों, लोकगाथाओं एवं नाट्यगीतों में मानव एवं मानवेत्तर सौन्दर्य का बहुविधी चित्रण मिलता है। मगही लोकगीतों में नारी के रूप-सौन्दर्य का चित्रण इस प्रकार किया जाता है।

''गोरिया पातरी, जइसे लपऽ हई लवंगिया के डार

पनवाँ अइसन गोरी आतर-पातर, अहो फुलवा अइसन सुकुवार हो,

अहो फुलवा अइसन सुकुमार, गोरीया पातरी,

जइसे लपऽहई लवंगिया के डाढ।''

उपर दिया हुआ लोकगीत फाग गीत के श्रेणी में गीना जाता है। इस गीत के माध्यम से गीतकार यह बताना चाहता है कि नायिका पान की पत्ती की तरह पतली और सुकोमल है लवंग की कोमल डाली की तरह लचकदार है फुल की भाती सुकुमार है। ऐसी अद्वितीय नारी-सौन्दर्य का चित्रण मगही लोकगीतों प्रचूर मात्रा में पाया जाता है और यही मगही लोकगीतों में फाग गीतों की अपनी अलग विशेषता है।

एक ओर जहाँ मगही लोकगीतों में गीतकार वधू से उसके पति के काले रंग (वर्ण) के होने पर भी उससे उसके पति के वर्ण की तुलन राम के काले रंग से करते हुए उसे इस बात के लिए आस्वस्त करना चाहते है की काले वर्ण के व्यक्ति और गौर वर्ण के पुरुष से अधि गौरवान्वित होते है वही दूसरी ओर दूसरे लोकगीतों में एक नव विवाहत वधू अपने पति के कोमलांग और गौर वर्ण की विशेषता से परिपूर्ण होने पर इतने अभिभूत है कि वह अपने प्रिय प्राण नाथ को क्षण मात्र के लिए भी छोड़ने को तैयार नहीं है। नारी के इस सौन्दर्य का वर्णन मगही लोकगाथाओं में प्रचूर मात्रा में देखने को मिलता है। मगही लोकगीतों तथा लोकगाथाओं में नारी सौन्दर्य का वर्णन राजकुमारी, स्वर्ग की अप्सरा, छत्राणी आदि के रूप में होना इनकी विशेषताएँ है। मगही लोककथाओं के रचनाकार लोरिक, कुँअर विजयी, नेटूआ, दयाल सिंह, गोपीचंद आदि होकर प्रेम का प्रस्ताव रख अपनी पत्नी या बहन के रूप में ग्रहण करते है। सुंदरता केवल देखने वाले के आँखों में ही नहीं होती बल्कि सांवेगिक भी होता है। सुन्दरता की अनुभूति मानव समस्त सामाजिक बाधाओं को पार कर अपने आराध्य को प्राप्त करने के लिए हर सम्भव प्रयास किया करते है। उदाहरण के रूप में हम यह देख सकते है कि लोकथाओं में वर्णित प्रेम सौन्दर्य किस तरह से दर्शाया जाता है जहाँ एक गरीब घर के पुरुष को अमीर घर के कन्या से प्रेम होना और उसे पाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करना। ठीक उसी प्रकार सामाजिक कुरीतिओं को दर किनार करते हुए एक राजा या यू कहे एक आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति का बेटा एक गरीब घर की कन्या से विवाह करना चाहता है और वह भी अपने प्रेम के लिए अपनी सारी ऐसों आराम को त्याग कर उसके साथ जीवन यापन करना चाहता है। यही लोकतात्विक सौन्दर्य मगही लोकगीतों की विशेषता के रूप में देखी जा सकती है। नारी के रूप में सौन्दर्य का प्रभाव इतना प्रबल रहा है की योद्धा या योगी दोनों ही पराजित होते रहे है। यह कहना गलत नहीं होगा कि इसी प्रकार के चमत्कारी कथाओं का चलन श्रोताओं के मध्य अत्यधिक रहा है।

मगही लोककथाओं, काव्यों, नाटकों में रूप सौन्दर्य, शील सौन्दर्य, कार्य व्यापार आदि विशेषताएँ इसके प्राण तत्व रहे हैं। प्रकृति सौन्दर्य को भी इन्हीं के समकक्ष रखा जाता है।

चंम्पिया का वर्णन मगही के चैहट गीतों में की जाती है। इसकी अतुलनिय सुन्दरता और शीलता उसके लिए कई बार समस्या का कारण बन जाता है। इसका उदाहरण यह है कि इसकी सौंदर्य और शीलता को देख कर एक युवक इतना मंत्रमुग्ध हो गया कि वह इससे बलपूर्वक विवाह करना चाहता

है। फलस्वरूप चंम्पिया अपने सितत्व की रक्षा करते करते अपने प्राणों की आहूती दे देती है। यहाँ चंम्पिया के रूप और शील सौन्दर्य का वर्णन बहुत ही स्पष्ट रूप से देखा जाता है। लोककाव्यों में एक ओर जहाँ नायिका के रूप सौन्दर्य के कारण नायिक के लिए बाधा उत्पन्न करती ही है, वहीं मगही लोकगीतों में नायिका के शीलगत सौन्दर्य का वर्णन अत्यधिक मात्रा में मिलता है। इन लोकगीतों में नायिका के रूप और शील सौन्दर्य के साथ-साथ लोकमंगल की कामना का वर्णन भी देखने को मिलता है। जब नायक का सौंदर्य देवों के राजकुमार जैसा हो जिसे देख अपसराएँ भी रीझ जाए तो इसकी सुन्दरता से नायक श्रोतागण में उसी रूप सौन्दर्य भाव को जागृत करता है, जो नायिका के रूप सौन्दय को देखने के बाद नायक में उत्पन्न होता है। यही रूप सौन्दर्य चेतना का साधारणीकरण लोकमंगल में विद्यमान रहता है।

चान-सुरुज राजा टिकावा गठादऽ, तरेगना के रजा हमरा बचवा लगादऽ

पेड़ा आउलड्डूआ के कोठवा उठादऽ, जलेबिया के राजा हमरा खिड़की लगादऽ

अग्हरा-पोखरवा के सगीया चखादऽ, मछरिया के राजा हमरा कुअवाँ खतादऽ

इस मगही लोकगीत में प्रकृति का उद्भूत और अतुलनिय सौन्दर्य चित्रण लोकमानस के धरातल पर बहुत ही विस्तृत रूप में हुआ है। नायिका अपने प्रेम की अभिव्यक्ति प्राकृतिक सौन्दर्य के माध्यम से इस तरह करना चाहती है कि वह पूर्णतः उसमें समाहित हो जाए।

अपनी रचना 'मगही लोकगीतों का वृहद संग्रह' में राम प्रसाद ंिसंह कहते है कि, ''चैहट या नाट्यगीतों में सौंदर्य का अद्वितीय चित्रण अत्यंत मनमोहक एवं चक्षु तथा कर्णप्रिय होता है। भावों की भयावनी रात्रि में मगध प्रदेश की रमनियाँ चैहट अभिनय का गायन प्रारम्भ करती है तो प्रिय के सथ नवोढा और प्रौढ़ा के साथ वृद्धाए भी बरबस दर्शक के रूप में खीचकर गली-कूचे में पहँुच जाती है।''

साड़ी न लहँगा लहरदार लेबो भउजी हो।

चोली न अंगिया बूटेदार लेबो भउजी हो।।

कँगना न लेबो, पहुँची न लेबो।

बाला तो लेबो, चमकदार सुनु भउजी हो।।

रुपया न लेबो, अठन्नी न लेबो।

गिन्नी तो लेबो हम हजार सुनु भउजी हो।।

जुग जुग जीओ भउजी, तोहरा ललनवा।

जुग जुग बढ़ो अहियात, सुन भउजी।।

इन पँक्तियों का साहित्य सौन्दर्य किसी शिष्ट साहित्य से अलग नहीं है। इस मगही लोकगीत में ननद अपनी भाभी से साड़ी न लेकर लहरदार लहँगा लेने की बात कर ही है आगे कहती है कि मैं चोली नहीं लुंगी मैं तो बूटेदार अंगिया लूंगी और इसके जवाब में भउजी अपनी ननद कि ओर प्रेम मई नजरों से केवल मुसकुराने के अलावा कुछ और जबाव नहीं दे पाती है। भारतीय परिवार परम्परा में ननद और भैउजाई का रिस्ता माता और पुत्री के समकक्ष माना जाता है। इसीलिए भौजाई के पास अपने ननद की इच्छा को पूरा करने के अलावा कोई और उपाय नहीं सूझता है। ननद आगे कहती है कि ''कँगना न लेबो हम बिछिया न लेबो बाला तो लेबो चमकदार सुन भऊजी है।'' अर्थात् न तो कंगन लुगी और न लुँगी बिछिया मैं तो सोनी की चमकदार बाला लुंगी। इस वाक्य पर मंच पर उपस्थित नायक जो इस बच्ची क भाई है वह अपने बचपन के सुखद पलों में बिलिन हो जाता है, और कहता है तुम ठीक इसी प्रकार बचपन में भी चुड़ी वाले को देखकर हठ किया करती थी और अंततः माँ तुम्हें दिला भी दिया करती थी। आगे के गीत में ननद भउजाई से कहती है कि आपका ललना युगों-युगों तक सलामत रहे और आप ऐसे ही सुख, समृधी और स्वास्थपूर्ण जीवन के हकदार पूरी जीवन रहे, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। अतः हम इस गीत के माध्यम से यह समझ पा रहे है कि मगही नाट्यगीतों में भी पारिवारिक संबंधों की भाव सौन्दर्य का चित्रण अत्यंत मार्मिक रूप में किया गया है। इस लोक गीत में बिम्ब विधान के साथ ही लोकतात्विक सौन्दर्य का भी समन्वय देखने के मिलता हैं और साथ ही पारम्परिक लोक सांस्कृतिक मूल्यों का वर्णन मार्मिक रूप में किया गया है।

एक और उदाहरण पर दृष्टि डालते हुए हम राम प्रसाद सिंह जी की रचना 'मगही लोक गीत का वृहद संग्रह' से लेते है जिसमें नैहर और ससुराल पक्ष के बारे में वर्णन किया गया है। इस उदाहरण में हम यह देखते हैं कि किस प्रकार गीतों को गाते समय महिलाएं दो भाग में बट जातीं है। उनमें से एक नैहर पक्ष तो दूसरा ससूराल पक्ष में बैठ कर हसी -ठठोलि किया करती है। इन लोकगीतों में जब नायिका को ससुराल वाले अपनी तरफ बुलाते है तो नायिक एक बच्चे की भाँति नाक सुकोड़ीती हुई दूर भाग जाती है और वहीं जब नैहर पक्ष के लोग बुलाते है तब वह भाग कर जल्दी से वहाँ पहुँच जाती है। इसी तरह का विशिष्ट सौन्दर्य का वर्णन करने वाले गीतों का गायन ग्रामीण परिवेश में मुख्य होता रहता है जो आज भी समाज को जोड़कर रखने में सार्थक प्रतित होता है। एक ओर जहाँ भारत वर्ष में एकल परिवार का चलन जोड़ों पर है वही आज भी भारत के ग्रामीण परिवेश में लोक गीतों के माध्यम से परिवार और समाज को जोड़ कर रखने का प्रयत्न चलता रहता है।

मगध प्रांत के लोकगीतों में लकड़ी का बना खड़ाउ जिसका दूसरा नाम चटकी भी पुकारा जाता है और साथ में हल्दी या पीली रंग में रंगा धोती और उस पर से विवाहित या अविवाहित पुरुष के कांघे पर जनेऊ अत्यंत सोभनीय और शुभ सूचक के रूप में माना जाता है। इस मान्यता के साथ एक और मान्यता यह भी है कि जब व्यक्ति इस वस्त्र को धारण करता है तब अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रतिबद्ध रहता है। भारतीय सनातन संस्कृति में

विवाह के समय इस वस्त्र का प्रयोग लगभग सभी रसमों में देखने को मिल जाता है। विवाह के समय महिलाएँ अपने कुलदेवता को आदर पूर्वक बुलाने के लिए इस गीत का गायन किया करती है-

लाली खडऊवाँ चढ़ी आवथी सोखादेव

हाथे सेबरन केरा साही।

इस परम्परित मान्यतानुसार मंगललाल ने लाल खड़ाऊ और पीली धोती पहन कर मछड़ी बझाई है। जिसे बेचने के लिए उसकी पत्नी उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिए बार-बार यह इंवकित करना चाहती है कि इस मछलियों को बिल्कुल पारम्परिक वेश-भूसा पहन कर पकड़ा गया है। जिससे यह पता चलता है कि लोकमानस के संस्कार, परम्परा, मान्यताएँ और धार्मिम तत्व कितना महत्वपूर्ण होते हैं और इन सभी मान्यताओं का समनवय लोकगीतों की गरिमा और सौन्दर्य को मनमोहक और श्रवण योग्य बनाती है। मगही लोकगीतों में नारी या पुरुष के रूप की सुन्दरता से विशिष्ट उसके शील सौन्दर्यों का वर्णन किया जाता है। मगही लोकगीतों की तरह मगही में रचित कथा, नाटक, पटेलिया आदि में भी लोकतात्विक तत्वों का समन्वय अत्यधिक मात्रा में मिलते हैं।

मगही लोकगीतों में रूप सौंदय का चित्रण प्रचूर मात्रा में देखने को मिलता है। मगध के प्रचलित लोकगाथाओं में लोरकाईन एक ऐसा पात्र है जिसमें दैविय सौंदर्य और असाधारण कार्यों का छिट-फूट प्रसंग अनापेक्षित न होगा। लोरकाईन से संबंधित कई दंत मूलक कथाओं में एक यह भी प्रचलित है कि लोरकाईन एक बार जंगल में अपनी गायों को चराने ले गया था, जहाँ उसका सामना आदमखोर शेर से हो जाता है। ठीक उसी समय राजा की पुत्री जंगल में शिकार खेलने अपने दासियों के साथ आई हुई थी। तभी शेर ने राजा की पुत्री पर अचानक से हमला बोल दिया। जैसे ही लोरिक ने शेर के गर्जन की आवाज सूनी तो वह सर्तक हो गया। ठीक उसी समय रानी ने शेर पर अपने तरकस में से एक तीर निकाल उस पर प्रहार किया। रानी की इस वीरता को देख लोरिक अत्यंत प्रसन्न होता है और वह भी अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हुए शेर से भीड़ जाता है। लोरिक ने अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हुए शेर को मार गिराया और रानी के प्रसंसा का पात्र बना। रानी उसके वीरता से इतना प्रभावित हुई की उसे अपने जीवनसाथी के रूप में चुनना चाहती है। राजा की पुत्री लोरिक के रूप सौंदर्य और उसके वीरता से प्रसन्न होकर उसे अपने साथ अपने राज्य चलने के लिए प्रसताव देती है। इस प्रकार के लोकगीतों में नायक और नायिका के बाह्य सौंदर्य के साथ-साथ आंतरिक सौंदर्य की भी चर्चा की जाती है। एक ओर जहाँ नायक-नायिका के रूप सौंदर्य की चर्चा की गई, वहीं आंतरिक सौन्दर्य के रूप में नायक की वीरता और नायिका के प्रेमपूर्वक आग्रह का वर्णन भी देखने को मिलता है। मानव जाति के लिए जितना महत्वपूर्ण बाह्य सौंदर्य है उससे अधिक आंतरिक सौंदर्य का जीवन में स्थान रहता है। आज के आधुनिक समाजिक परिवेश में रूप सौंदर्य का वर्णन समाजिक शब्दाबलियों के माध्यम से बहुत कम होता जा रहा है। वर्तमान में रची जाने वाली लोकगीतों में समाजिक शब्दों का आभाव प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि वर्तमान में लोकगीतों का वितरण आर्थिकी को केन्द्र में रखकर किया जा रहा है। यहाँ आर्थिकी से यह अभिप्राय है कि श्रोता के द्वारा किस रतह के गीतों का मांग किया जा रहा है। आज के आधुनिक जीवन में रूप सौंदर्य की परिभाषा समय और परिवेश के आधार पर बदलता जा रहा है और शिष्टता के स्थान पर अशिष्टा अपना पाँव बहुत ही मजबूती से पसारता जा रहा है। इस एक प्रत्यक्ष उदाहरण हम अपने घरों में यह देख सकते है कि हमारे नानी-दादी और माता-फूला के उम्र के लोगों में आज भी परम्पराओं का निर्वहन करते समय गीतों को अधिक महत्त्व दिया जाता है परंतु आज के युवा पीढ़ी में लोकगीतों में दिलचस्पी और परंपराओं का विधिपूर्वक निर्वहन कर पाना समय के साथ कठिन होता जा रहा है। हमें आधुनिक शिष्ट और अश्लील गीतों का तो बोध होता है परंतु हम अपने धरोहर रूपी लोकगीतों को दिन-व-दिन भुलते जा रहे है और इसका परिणाम यह है कि ग्रामीण परिवेशों में भी लोकगीतों के माध्यम से रूप सौंदर्य का वर्णन होना विलुप्तता की ओर जा रहा है। इसे तभी बचाया जा सकता है जब हम अपने परम्परा रूप नीव को मजबूती प्रदान कर आधुनिक गीतों के साथ-साथ पारम्परिक लोकगीतों को भी सम्मान देंग।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Umashankar Bhattacharya: Magahi proverb, 1919
Jai Nath Pati and Mahavir Singh: Magahi idiom solving, 1928
Dr. Vishwanath Prasad: Magahi sanskar geet, 1965
Dr. Ram Prasad: Magadh's folk tales: study, 1996
Sampatti Aryan: Magahi folk literature, 1965

Dr. Ram Prasad Singh: Collection of Magahi folk songs, 1998
Inamul Haq: Literary study of Magahi folk tales, 2006,
Dr. Shrikant Shastri and Dr. Ramanand Krit: Magahi Folk Songs and Sensharan
Mathura Prasad Singh and Rameshwar Mahato Kriti: Magahi Bal Geet
Vishwanath Prasad Written: Magahi Sanskar Geet
Sant Ram Nagina Singh Krit: Magahiya Geet
Appan Geet Composed by Shri Nandan Shastri
Ramdas Arya Krit: Geet Man Ke
Dr. Ram Prasad Sharma: Folk tales of Magadha: Anushilan and Sanchay
Dr. Ram Prasad Sharma: History of Magahi Literature
Dr. Vasudevanandan Prasad: Modern Hindi Grammar and Composition, 23rd Edition 1993